https://www.echetana.com/Vol.-10, No.-01, Jan.-Mar. 2025, pp. 109-112

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं एवं निजी संस्थाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन

इस्लाम मोहम्मद
शोधार्थी पीएच.डी. (शिक्षा)
डॉ. माधुरी दत्ता
व्याख्याता
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)
Email-islamjodhpur0291@gmail.com, Mobile-6350528272

……………………………………………………………….
First draft received: 18.02.2025, Reviewed: 20.02.2025
Final proof received: 18.03.2025, Accepted: 22.03.2025

सार-संक्षेप

राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं एवं निजी संस्थाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं एवं निजी संस्थाओं के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतें में सार्थक अन्तर नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान के कुछ जिलों के महाविद्यालयों को लिया गया है इसमें स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को ही न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है, जो यादृच्छिक विधि से चुने गये है।

मुख्य शब्द: *राजनीतिक चेतना, राजनीतिक व्यवस्था, जनजाति क्षेत्र।*

प्रस्तावना

वर्तमान युग में सभी मनुष्य को प्रजातान्त्रिक युग होने के कारण समान अवसर उपलब्ध है। ऐसी परिस्थिति में आदतों एवं आकांक्षाओं का स्तर सुधार कर प्रत्येक मानव अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। अपनी आदतें व आकांक्षाएँ किस पर उन्नत एवं समयानुकूल बनाएं इसकी जानकारी होना आवश्यक है। इस प्रकार की जानकारी के अभाव में अच्छी आदतें एवं उच्च आकांक्षाओं का विकास सम्भव नहीं हो सकता। अच्छी आदतों के निर्माण में चरित्र की अहम भूमिका होती है। जिनकी आदतें अच्छी होती है वही चरित्रवान है। चरित्रवान बनना शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है। यदि विद्यार्थियों को चरित्रवान बनाना है तो उनकी आदतों का अध्ययन करके उनमें वांछित सुधार करना आवश्यक हो जाता है। आदतों में सुधार के साथ बुरी आदतों का निराकरण भी चरित्र निर्माण में आवश्यक है।

विद्यार्थियों में अच्छी आदतें, परिवार, समाज, विद्यालय व महाविद्यालय डालने का प्रयास करते हैं। इनमें सभी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। सुकार्य में दिलचस्पी, रूचि, संलग्नता, तत्परता, समय की पाबन्दी, परोपकार अध्ययन की आदत कर्त्तव्य एवं सत्यमार्ग का अनुसरण आदि अच्छी आदतें विद्यार्थियों में शिक्षकों द्वारा डाली जाती है। अच्छी आदतों द्वारा मानव अपने आपको सामाजिक वातावरण में व्यवस्थित में न केवल सफल हो जाता है अपितु स्वस्थ सामाजिक परिवेश का निर्माण करने में सहायक भी बन जाता है।

मनुष्य हर समय नवीन अधिगम में तो व्यस्त नहीं रहता उसका अधिकांश व्यवहार पूर्वाजित संस्कारों में सुदृढ़तापूर्वक स्थापित सोपानों के आधार पर सम्पन्न हुआ करते हैं। हमारे इसी तरह के अर्जित संस्कार जो पूर्वगामी अधिगम के आधार पर इतने सुदृढ़ हो गए हैं कि उनके बिना किसी विशेष चिन्तन या ध्यान के हम उन्हें कार्यान्वित कर लेते हैं, वह आदत के अन्तर्गत आते हैं। इस प्रकार आदत जन्मजात नहीं होती है आदत अधिगम द्वारा निर्मित स्थायी व्यवहार है यह अर्जित है। जन्म के साथ–साथ व्यक्ति बहुत कुछ अपने परिवेश से सीखता है। व्यक्ति की सीखी हुई क्रियाएँ बार–बार एक ही रूप धारण कर लेती है। यही स्थायी आवरण आगे चलकर आदत का रूप धारण कर लेती है। आयु के साथ–साथ आदतों का भी विकास होता रहता है।

शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जो छात्रों में अच्छी आदतों को ग्रहण करने का विवेक उत्पन्न करता है। आदत एक अर्जित व्यवहार है जो स्वतः होता है। सीखने की स्थितियों में व्यक्ति को कई प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। बार–बार की अनुभव सम्बन्धी क्रियाएँ आदतों को जन्म देती हैं। इस प्रकार अच्छी अधिगम स्थितियाँ अच्छी अधिगम आदतों का विकास करने वाली होती हैं।

समस्या कथन

राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं एवं निजी संस्थाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

2. राजस्थान के सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. राजस्थान के निजी संस्थाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
4. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं तथा सरकारी संस्थाओं में अध्यनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. राजस्थान के सरकारी संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं व निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. राजस्थान के सरकारी संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तकनीकी शब्दों में परिभाषीकरण

अल्पसंख्यक

समाजशास्त्र शब्दकोश के अनुसार किसी भी समूह का आधे से कम होना। वास्तव में यह शब्द उन समूहों के लिए प्रयोग होता है जिनकी जनसंख्या इतनी कम हो कि वे अपने सामर्थ्य का प्रयोग अपनी प्रगति के लिए पूर्ण रूप से न कर सके।

अध्ययन आदतें

जन्मजात मूल प्रवृतियों के साथ–साथ व्यक्ति बहुत कुछ अपने परिवेश से सीखता है। इसकी बहुत सी सीखी हुई क्रियाएँ बार–बार एक ही रूप में घटित होने के कारण स्थायी आचरण का रूप धारा कर लेती है। यह स्थायी आचरण जब जन्मजात क्रियाओं के समान घटित होते रहते हैं तो इन्हें आदत कहा जाता है।

सिम्पसन के अनुसार शिक्षा में सीखने अभ्यास, समय और कार्य का समायोजन अध्ययन के द्वारा करना ही अध्ययन आदतें है।

शोध से सम्बन्धित साहित्य

1. **विनय के. नीरू (2010)** – इन्होनें अपने शोध ''विज्ञान एवं कला संकाय में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन''

   उद्देश्य – कला व विज्ञान संकाय के माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की तुलना करना।

   निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने पाया कि माध्यमिक स्तर के विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों में अध्ययन आदतें निम्न पायी गई।

2. **डॉ. सुरेशचन्द्र (2013)** – ''विद्यालय के प्रकार और परिवार के आकार के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन।''

उद्देश्य

(i) सरकारी ओर गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अन्तर का अध्ययन करना।

(ii) एकल परिवार एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अन्तर का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

(i) सरकारी विद्यालयों से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें अधिक अच्छी पाई गई।

(ii) संयुक्त परिवार व एकल परिवार में रहने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

अल्पसंख्यक संस्थाओं के विद्यार्थी	– 200
सरकारी संस्थाओं के विद्यार्थी	– 200
निजी संस्थाओं के विद्यार्थी	– 200

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समय, श्रम एवं परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में समस्या का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है –

1. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु राजस्थान के कुछ जिलों का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य में अल्पसंख्यक, सरकारी एवं निजी संस्थाओं का चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य को विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों तक ही सीमित रखा गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी ने निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया हैं –

अध्ययन आदतें मापनी – डॉ. एम.एन. पलसाने एवं अनुराधा शर्मा

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी के अन्तर्गत शोधार्थी ने क्रमशः निम्नलिखित युक्तियों का प्रयोग किया है –

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. क्रान्तिक अनुपात

प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण

1. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1.1

राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता –

संस्था वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
अल्पसंख्यक संस्थाओं के विद्यार्थी	200	54.5	5.56	1.52	असार्थक
सरकारी संस्थाओं के विद्यार्थी	200	56.35	7.19		

व्याख्या

उपर्युक्त तालिक संख्या 1.1 में अल्पसंख्यक व सरकारी संस्थाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों से सम्बन्धित प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 54.5 एवं 56.35 तथा मानक विचलन का मान क्रमशः 5.56 एवं 7.19 प्राप्त हुए हैं।

इन मानों के आधार पर दोनों मानों के समूह के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.52 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतत्रता के अंश 0.05 सार्थकता के स्तर पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.96 से कम प्राप्त हुआ है।

अतः यहां पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के 0. 05 पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2 राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है

सारणी संख्या 1.2

राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं व निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता

संस्था वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
अल्पसंख्यक संस्थाओं के विद्यार्थी	200	54.5	5.56	.38	असार्थक
निजी संस्थाओं के विद्यार्थी	200	53.95	9.02		

व्याख्या

उपर्युक्त तालिक संख्या 1.2 में अल्पसंख्यक व सरकारी संस्थाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों से सम्बन्धित प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 54.5 एवं 53.95 तथा मानक विचलन का मान क्रमशः 5.56 एवं 9.02 प्राप्त हुए हैं।

इन मानों के आधार पर दोनों मानों के समूह के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान .38 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतत्रता के अंश 0.05 सार्थकता के स्तर पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.96 से कम प्राप्त हुआ है।

अतः यहां पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के 0. 05 पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3 राजस्थान के सरकारी संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है

सारणी संख्या 1.3

राजस्थान के सरकारी संस्थाओं व निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता

संस्था वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
सरकारी संस्थाओं के विद्यार्थी	200	56.35	7.19	1.54	असार्थक
निजी संस्थाओं के विद्यार्थी	200	53.95	9.02		

व्याख्या

उपर्युक्त तालिक संख्या 1.3 में अल्पसंख्यक व सरकारी संस्थाओं के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों से सम्बन्धित प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 56.35 एवं 53.95 तथा मानक विचलन का मान क्रमशः 7.19 एवं 9.02 प्राप्त हुए हैं।

इन मानों के आधार पर दोनों मानों के समूह के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.54 प्राप्त हुआ है। यह मान स्वतत्रता के अंश 0.05 सार्थकता के स्तर पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.96 से कम प्राप्त हुआ है।

अतः यहां पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के 0. 05 पर स्वीकृत कर कहा जा सकता है कि अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

1. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं व सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना 1 को स्वीकृत किया जाता है।
2. राजस्थान के अल्पसंख्यक संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना 2 को स्वीकृत किया जाता है।
3. राजस्थान के सरकारी संस्थाओं तथा निजी संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना 3 को स्वीकृत किया जाता है।

भावी शोध हेतु सझाव

शोध का क्षेत्र व्यापक होता है। कोई भी शोधकर्ता किसी भी शोध समस्या के सभी पक्षों को नहीं छू सकता है। अतः भावी शोध हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं –

1. इस शोध को ओर अधिक व्यापक बनाया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध को राजस्थान के कुछ जिलों तक सीमित रखा गया है। अग्रिम शोध कार्य हेतु अन्य जिलों के

अल्पसंख्यक संस्थाओं, सरकारी संस्थाओं व निजी संस्थाओ का चयन किया जा सकता है।

3. इसका बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है।
4. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।
5. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों का चयन कर अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- ढौंडियाल, सच्चिदानन्द एवं फाटक, अरविन्द (2003) : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- गैरेट, हैनरी ई (1978) : शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, कल्याण पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- गुप्ता, एस.पी. व गुप्ता अल्का (2014) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद
- मंगल, एस.के. (2010): शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच. आई. लर्निग प्रा.लि., नई दिल्ली
- बघेला, हतेसिंह (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।